श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर
Shree Lakshminarayan Temple

समाचार बुलेटिन - अंक १-२००८

प्रबंध समिति

अध्यक्ष
कृपा राम शर्मा

उपाध्यक्ष
रणवीर कुमार सिंह

सचिव
सत्यप्रकाश तिवारी

सहायक सचिव
सुनील कुमार

खजांची
बलराम चौबे

सहायक खजांची
पोपटभाई पटेल

समिति सदस्य
राम दुलारे शाही
महेन्द्र प्रसाद राय
जगदीश गुप्ता
रमेश कुमार तिवारी
अजय कुमार दुबे
अजय कुमार गुप्ता

प्रिय सदस्यगण एवं श्रद्धालुजन,

प्रभु श्री लक्ष्मीनारायण सदा हमारी रक्षा करें !

गत वार्षिक महासभा में 10 अगस्त,२००८ को मंदिर की नवीन प्रबंध समिति का चुनाव हुआ जो 2008-2009 के लिए कार्यरत है। पुरानी प्रबंध समिति के सदस्य जो नवीन समिति में अध्यक्ष चुने गए हैं,उन्हें छोड़कर पूरी समिति नई है। नई समिति के समर्पित और उत्साहपूर्ण सदस्य अनेक नवीन कार्यक्रमों को आपकी सेवा में प्रस्तुत करना चाहते हैं जिससे कि हमारे सदस्यों और भक्तों की सभी सुविधाओं का पूर्णतया खयाल रखा जा सके।

मंदिर की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनेक उप समितियाँ गठित की गई हैं। सभी भक्तों व सदस्यों से अनुरोध है कि इन समितियों में शामिल होकर नई और और ताज़ी विचारधाराओं को लागू करने में प्रबंध समिति की सहायता करें। मंदिर की सफलता सदस्यों की सहभागिता, समर्पण और सहयोग पर निर्भर करती है। **सेवा कर्म के द्वारा ही प्रभु से मेवा पाया जा सकता है।**

बच्चों में धार्मिक मूल्यों और गुणों की स्थापना व उनके विकास के लिए कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। अधिक विवरण हमारे आगामी बुलेटिनों में देखे जा सकते हैं। समाचार बुलेटिनों के माध्यम से हम भक्तों को कार्यक्रमों और विकास कार्यों से अवगत कराते रहेंगे।

नए सदस्यों की भरती हमारा मुख्य अभियान होगा। हमने यह अभियान शुरू कर दिया है और आप सभी से ईश्वर सेवा में अधिक से अधिक सदस्य बनने का निवेदन है। जिन सदस्यों ने अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करवाया है वे कृपया नवीनीकरण करवा लें।

सदस्यता शुल्क और दान ही मंदिर की गतिविधियों के लिए आय के प्रमुख साधन हैं।

सदस्यों के सक्रिय सहयोग और समर्थन के बिना कोई भी संस्था विकास नहीं कर सकती है। अतः हम मंदिर प्रबंधन और कार्यक्रमों के आयोजन व परिचालन में आपके सक्रिय सहयोग की आशा करते हैं।

यह आपका मंदिर है। आइए ईश्वर की सेवा में हम सभी कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ें।

हमारे नियमित कार्यक्रम :

रविवार

प्रातः 11.00 बजे से 12.00 बजे तक	:	भजन
दोपहर 12.00 बजे से अपराह्न 12.30 बजे तक	:	प्रवचन
अपराह्न 12.30 बजे से अपराह्न 12.35 बजे तक	:	एकता गान
अपराह्न 12.35 बजे	:	आरती, प्रसाद वितरण व प्रीतिभोज

मंगलवार

अपराह्न 2.30 बजे से 5.00 बजे तक	:	महिला सत्संग, भजन एवं प्रवचन
सायं 7.00 बजे से 9.00 बजे तक	:	गीता ज्ञान

अन्य धार्मिक कार्यक्रम अगले बुलेटिनों में प्रकाशित होंगे।

"हमारा धन्यवाद और आपका साथ"

हमारे आगामी कार्यक्रम

रविवार, ३१ अगस्त २००८

प्रीतिभोज - अपराह्न १२.३० बजे से १.३० बजे तक।

भोज में सभी सादर आमंत्रित हैं - हमारा धन्यवाद,आपके सुझाव।
सेवा हेतु व मंदिर की गतिविधियों में भाग लेने के लिए पधारें।

रविवार, ७ सितम्बर २००८

अमृत वाणी

प्रातः १०.०० बजे से अपराह्न १२.३० बजे तक
श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में
परम पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज द्वारा।

गणेश चतुर्थी	बुधवार	०३-०९-२००८
राधा अष्टमी	शुक्रवार	०७-०९-२००८
विश्वकर्मा पूजा	मंगलवार	१६-०९-२००८
नवरात्रि आरंभ	मंगलवार	३०-०९-२००८

मुफ्त कानूनी सहायता और सेवा :

हम अपने सदस्यों की सेवा में कुछ मुफ्त मौलिक कानूनी सहायता प्रदान करेंगे। यह उन सदस्यों के लिए है जिनकी पूरी सदस्यता शुल्क जमा है या जिनके बच्चों की आयु 21 साल से कम है। सदस्यता के अपने लाभ हैं। जो भी सदस्य "डीड पोल" या लगभग एक पेज की साधारण वसीयत करवाना चाहते हैं,वे निःशुल्क (मुफ्त) करवा सकते हैं। उन्हें मंदिर के सचिव से पहले ही आरक्षण करवाना पड़ेगा ताकि मुफ्त सेवा की योग्यता की जाँच की जा सके।

प्रबंध समिति श्री राम प्रकाश तिवारी, श्री रणवीर कुमार सिंह, श्री महेन्द्र प्रसाद राय, श्री विजय कुमार राय और श्री रमेश चंद्र तिवारी की आभारी है और धन्यावद देती है जिन लोगों ने मंदिर और उसके सदस्यों की सेवा का संकल्प लिया है।

जो श्रद्धालु इस सेवा में भाग लेना चाहते हैं वे कृपया मंदिर सचिव से संपर्क स्थापित करें।

बधाइयाँ !!!

- मंदिर प्रबंध समिति अपने सदस्यों और भक्तों की ओर से **श्री शिवाकांत तिवारी** को राष्ट्रीय दिवस 2008 के दौरान सिंगापुर सरकार द्वारा पदत्त 'मेरिटोरियस सेवा सम्मान' के लिए हार्दिक बधाई देती है।
- **कुमारी संगीता देवी पुत्री श्री सुरिन्दर राय** को राष्ट्रीय विश्वविद्यालय सिंगापुर द्वारा विशेष योग्यता सहित प्रथम श्रेणी में एलएल.बी. की उपाधि प्रदान करने पर मंदिर प्रबंध समिति हार्दिक बधाई देती है।

हम समुदाय को गौरवान्वित करने के लिए इनके आभारी हैं और आशा करते है कि इनका भविष्य सदैव उज्ज्वल रहेगा।

"हम समुदाय को गौरवान्वित करने के लिए इनके आभारी हैं और आशा करते हैं कि इनका भविष्य सदैव उज्ज्वल रहेगा।"

गीता सार :

"सेवा ही प्रभु की सबसे बड़ी सेवा है।"

"जो गीता के परम ज्ञान को मेरे भक्तों तक पहुँचाएगा,वही मेरा सबसे समर्पित भक्त होगा और निश्चय ही मेरी शरण में आएगा। उससे अधिक मेरा प्रिय कोई नहीं हो सकता और न ही कोई सेवा मुझे अधिक आनंदित कर पाएगी।" (१८.६८-६९)

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

23 अगस्त 2008 को मंदिर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का आयोजन किया गया।

प्रभु श्री कृष्ण का जन्मोत्सव। कृष्ण जन्मोत्सव कृष्ण जयंती या जन्माष्टमी के दिन पाँच हजार साल पूर्व प्रभु मथुरा में अवतरित हुए। हम सभी भक्त यह जानते हुए कि उस प्रभु का सामान्य आविर्भाव (जन्म) नहीं हुआ था, जन्मोत्सव के माध्यम से उनकी भक्ति में सराबोर हो जाते हैं। भविष्य पुराण में कहा गया है-हे परमेश्वर! हमें यह बताने की कृपा करें कि माँ देवकी ने आपको कब जन्म दिया। आप से यह जानने के उपरान्त हम उस दिन महोत्सव का आयोजन करना चाहते हैं। हम आपके चरण कमलों में पूर्णतया समर्पित हैं और हम महोत्सव से मात्र आपकी सेवा करना चाहते हैं। इसलिए वैष्णव और भक्त इस दिवस पर महोत्सव का आयोजन करते हैं और वृन्दावन (भारत) में,जहाँ प्रभु का धरा पर अवतरण हुआ,विशेष आयोजन करते हैं।

श्रावण मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को प्रति वर्ष जन्माष्टमी का आयोजन किया जाता है। हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार उस समय रोहिणी नक्षत्र का समय था। जन्माष्टमी समारोह दो दिनों तक चलता है। प्रथम दिवस कृष्णाष्टमी या गोकुलाष्टमी और दूसरा दिवस कलाष्टमी या जन्माष्टमी कहा जाता है। इन दोनों दिवसों की मध्यरात्रि को मुख्य आकर्षण होता है,जब प्रभु का अवतार हुआ था। मध्यरात्रि की शंख ध्वनि,भजन-कीर्तन,आरती और पालने के डोलने से महोत्सव अपने चरम आकर्षण पर पहुँचता है। बाल गोपाल की प्रतिमा को पंचामृत (दूध,घी,तेल,शहद और गंगाजल का मिश्रण) में स्नान करवाने के बाद पीले वस्त्र और आभूषण धारण करवाते हैं। पंचामृत प्रसाद के रू प में भक्तों में बाँटा जाता है। कुछ भक्त अपना उपवास (व्रत) प्रथम दिवस की मध्यरात्रि में समाप्त करते हैं तो कुछ दोनों दिनों का उपवास रखते हैं।

प्राचीन भारत में मथुरा में यदुवंशी राजा उग्रसेन राज्य करते थे। उनका एक पुत्र कंस तथा एक पुत्री देवकी थी। कंस बहुत निर्दय था तथा एक दिन वह अपने पिता को जेल में बंद करके जबरदस्ती राजा बन गया। कंस की सेना के एक उच्च अधिकारी वासुदेव के साथ देवकी का विवाह हुआ। शादी के समय आकाशवाणी हुई कि देवकी के आँठवें पुत्र द्वारा कंस का वध होगा। इस भय से कंस ने देवकी और वासुदेव को जेल में बंद कर दिया तथा आदेश दिया कि वे अपने सभी बच्चों को कंस के हवाले कर देंगे। कंस ने छः बच्चों की हत्या कर दी किन्तु सातवें बच्चे का वध नहीं कर पाया क्योंकि दैवीय शक्ति के कारण सातवें बच्चे का जन्म वासुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ से हुआ था। इस प्रकार कृष्ण के बड़े भाई बलराम का जन्म हुआ।

जब आँठवें बच्चे का जन्म हुआ तो चमत्कार ही हो गया। जेल के दरवाज़े अपने आप खुल गए,सभी द्वारपाल गहरी नींद में सो गए। उसी समय आकाशवाणी हुई कि वासुदेव बच्चे को लेकर गोकुल में अपने सखा नन्द और उनकी पत्नी यशोदा के पास जाएँ तथा अपने पुत्र को उन्हें देकर उनकी पुत्री को साथ लेकर वापस आ जाएँ। इस तरह कंस की वध योजना सफल नहीं हो पाई और आठवें पुत्र प्रभु कृष्ण का पालन-पोषण नन्द बाबा के यहाँ यशोदा माता की छत्र-छाया में हुआ। बाद में,भगवान कृष्ण ने अपने मामा कंस का वध करके मथुरा के लोगों कंस के अत्याचार से मुक्त किया।

जन्माष्टमी या कृष्णाष्टमी हिन्दुओं का एक मुख्य लोकप्रिय उत्सव है जो प्रभु के जन्मदिन के रूप में,भगवान विष्णु जिन्होंने भागवत् गीता का संदेश दिया,उनके पुनः अवतार के लिए उमंग-उत्साह से मनाई जाती है।

श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, ५ चंदर रोड, सिंगापुर - २१९५२८

दूरभाष : 6293 0195, Fax: 6293 0460. Web: www.laksminarayantemple.com